ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड – VII अंक – XI

फ़रवरी, 2016

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- रोजगार बढ़ाने के लिए ग्रामीण युवाओं हेतु कौशल विकास
- इस माह के कृषि उद्यमी: श्री.एस. नटराजन, मदुरै, तमिलनाडु
- इस माह का संस्थान: केवीएएएफ़, सांगली, महाराष्ट्र
- कृषि महिलायों के लिए अनुकूल कृषि यंत्रे और उपकरण

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

रोजगार बढ़ाने के लिए ग्रामीण युवाओं हेतु कौशल विकास: मैनेज एवं पीआई फ़ाउंडेशन की नवीन पहल

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज) एवं पीआई फ़ाउंडेशन जो पीआई इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, हैदराबाद का चेरीटेबल ट्रस्ट है, ने एग्रो-इनपुट इंडस्ट्री में रोजगार प्राप्त करने हेतु ग्रामीण युवाओं को उनके कौशल के विकास के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु सहकारिता से कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किया। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण युवाओं में कौशल बढ़ाना है ताकि वें लाभप्रद रूप से कृषि इनपुट विनिर्माण और विपणन इंडस्ट्री द्वारा विस्तारण/विपणन और बिक्री गतिविधियों के द्वारा उनके उत्पादों की बिक्री के लिए नियोजित किए जा सके और कृषि उत्पादकता के उच्च स्तर को प्राप्त करने के लिए कृषकों की सेवा कर सके। तेलंगाना राज्य से लगभग 40 ग्रामीण युवा जिन्होंने उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की है और जो कृषक परिवार से संबंध रखते है तथा मुख्यत: आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लोग जिनकी न्यूनतम आयु 20 और अधिकतम आयु 28 वर्ष है चुने गए है। यह प्रशिक्षण प्रकासम कृषि विज्ञान केंद्र (पीकेवीके) जाम्मियाकुंटा, कारीमनगर जिले के परिसर में आयोजित किया जा रहा है। केवीके के पास अभ्यर्थियों के लिए पूर्ण भौतिक मूलढांचा है, सस्य विज्ञान, कीटविज्ञान, फसल विज्ञान, और विस्तार में संकाय मौजूद है और 45 दिवसीय आवासीय पाठ्यक्रम के लिए आभ्यासिक प्रदर्शिनी आयोजित कर सकता है। आवासीय पाठ्यक्रम में कक्षा प्रशिक्षण और क्षेत्रीय प्रशिक्षण होगा। राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज) इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए चयनित ज्ञान साथी है। ग्रामीण युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रम हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूल पीआई इंडस्ट्रीज़ इंडिया और पीकेवीके के कार्यपालकों की पहली बैठक में तैयार किया गया था। इस पाठ्यक्रम की मुख्य विषय वस्तु यानि राज्य में एग्रो-पर्यावरणीय अंचल, मृदा परीक्षण और मृदा उर्वरता प्रबंधन, क्षेत्रीय फसलों की कृषि पद्धतियाँ, खाद्य एवं पोषक तत्व प्रबंधन, कीटनाशक, रोग एवं कमियाँ , विभिन्न सिंचाई पद्धतियाँ, इनपुट के न्यायिक प्रयोग को कम करने हेतु कृषकों को शिक्षित करना, उच्चतम कृषि पद्धतियाँ, विस्तारण पद्धतियाँ और आईटी प्रयोग, फसल प्रबंध पद्धतियों को समझने के लिए अनुसंधान स्टेशन का दौरा, विभिन्न कृषि इनपुट को समझने के लिए विक्रेता की दुकान का दौरा, संचार कौशल और कृषि इनपुट विपणन की प्रणाली है। मैनेज, पीकेवीके के योग्य और अनुभवी विशेषज्ञ और पीआई अधिकारी प्रशिक्षण में सहयोग देंगे। सभी प्रशिक्षित ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण के पश्चात ऐग्री-बिज़नस कंपनियों में नियुक्त किया जाएगा। वर्तमान मॉडल अन्य ऐग्रीबिज़नस कंपनियों को इसी प्रकार की परियोजनाओं को आरंभ करने के लिए प्रेरित करेगा जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण युवाओं को कृषि के क्षेत्र में आकर्षित किया जा सकेगा।

केवीके, जाम्मियाकुंटा, करीमनगर में कौशल विकास कार्यक्रम

सेवानिवृत्त किन्तु हरित शहरों से थके नहीं

शहरों में छत/घर के पीछे/बाल्कनी में सब्जी के उत्पादन को बढ़ावा देना नागरिकों की आवश्यकताओं को पूरा करने और अच्छे स्वास्थ्य मानक बनाए रखने में सहायक होगा। छतों पर सब्जियाँ उगाना ताज़ी सब्जियों के उत्पादन में आत्म-निर्भर रहने में सहायता प्रदान करेगा। श्री.एस.नटराजन, कृषिविशेषज्ञ, तमिलनाडु राज्य कृषि विभाग से 33 वर्ष की सेवा के पश्चात सेवानिवृत्त हुये। जैविक कृषि में उनके ज्ञान ने उन्हें कृषक समुदाय हेतु कृषि-परामर्श आरंभ करने के लिए प्रेरित किया। इस मोड पर, उन्हें एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र (एसी एवं एबीसी योजना) योजना के बारे में पता चला। वर्ष 2014 में, उन्होंने वालन्टरी असोशिएशन फॉर पीपल सर्विसेस (वीएपीएस), मदुरै में दो माह के आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण के पश्चात, उन्होंने एग्री-मार्केटिंग कॉम्प्लेक्स मदुरै में नटराजन एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र नाम से अपना फ़र्म आरंभ किया। वें कृषकों से रोज़ बात करते थे और उन्हें जैविक कृषि से अवगत कराते थे और केंचुआ-खाद, खाद, जैव-उर्वरक और जैव-कीटनाशक सहित जैविक इनपुट की आपूर्ति भी करते थे। अनुरोध पर वें कृषकों के खेत का दौरा करते थे और घर तक सेवाएँ पहुँचाते थे। अब वें पाँच गाँवों का दौरा करते है और सभी प्रकार के फसल उत्पादन पर तुरंत समाधान प्रदान करते हैं। उन्होंने बैंगन, मिर्च, टमाटर, मोरिंगा के पौधे और प्रो-ट्रे नर्सरी में उगाये गए सजावटी पौधों की आपूर्ति के लिए शेड-नेट नर्सरी स्थापित की। नटराजन के अनुसार, तैयार पौधों की बिक्री तमिलनाडु राज्य के मदुरै, शिवगंगाई और दिंडीगुल जिले के लगभग 5000 कृषकों को लाभ पहुंचा रहा है।

एस. नटराजन से बात करती हुई श्रीमती. उषा रानी, डीजी, मैनेज, हैदराबाद

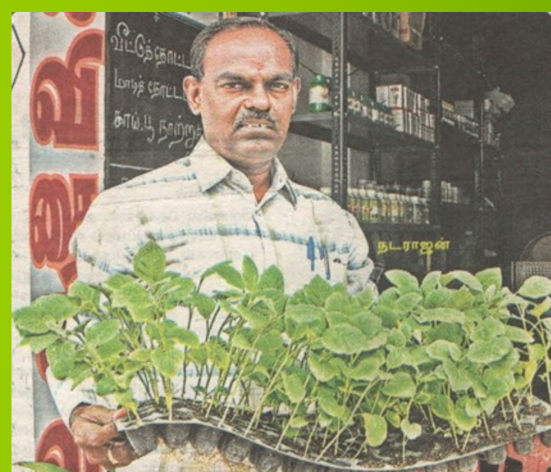

प्रो-ट्रे नर्सरी के साथ श्री. एस.नटराजन

श्री.नटराजन ने आगे कहा कि, स्मार्ट सिटि मिशन के अंतर्गत मैंने शहरों के छतों को हरा करना आरंभ किया। मेरे पदावधि के दौरान, मैंने कुछ शहरों का दौरा किया जहां नए भवनों की छतें आंशिक रूप से पौधों और सोलर पैनल से ढके हुये थे। मैं मदुरै में भी यही दौहरना चाहता था, अतः शहरी कृषि पर परामर्श आरंभ किया। मैंने तैयार पौधों की आपूर्ति के साथ छत एवं किचन गार्डेनिंग पर ध्यान दिया। मैंने गृहिणियों के लिए टेरेस-गार्डेनिंग पर कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए (वीएपीएस, मदुरै और स्थानीय तमिल डेलि “दिनमलार” पत्रिका की सहकारिता से मुख्यतः गृहिणियों के लिए)। लगभग 500 लाभार्थी नियमित रूप से शहरी कृषि पर परामर्श ले रहे हैं। श्री.नटराजन का कहना है कि, “वर्तमान युग में सूचना अधिक शक्तिशाली है, व्यक्ति सूचना की बिक्री से अमीर बन सकता है”। मेरा वार्षिक कारोबार रु.50 लाख तक पहुँच गया है और मैंने दो कुशल कर्मचारियों को नियुक्त किया है”।

श्री.एस. नटराजन

नटराजन एग्री-क्लीनिक एंड एग्री-बिज़नस केंद्र , जे-163, एग्रो-इनपुट्स लेन, पेड्डी एंड फ्लावर मार्केट, मट्टूथ्वनी, मदुरै-625007

मोबाइल: 09443860983, ईमेल : agrinatrajan@gmail.com

श्री. एन.जी. कामत

नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम: कृष्णा वैलि एडवांस्ड एग्रिकल्चरल फ़ाउंडेशन (केवीएएएफ़), सांगली, महाराष्ट्र

पता: पी-61 एमआईडीसी कुप्वाड, सांगली – 416436

फोन: 0233-2644715,

मोबाइल: 09372105764

ईमेल:

ngkay@yahoo.com, av-devarshi786@gmail.com

वेबसाइट:

www.kvvaaf.org

प्रशिक्षण की सं.: 122

प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की सं.: 3843

स्थापित वेंचरों की सं.: 1947

सफलता का दर: 50.66%

स्थापित एग्री-वेंचर: एग्री-क्लीनिक, डेरी एकक, पौल्ट्री, नर्सरी, जैव-उर्वरक एकक, केंचुआ खाद एकक, दूध एकत्रण एकक, शेड नेट एवं पुष्पकृषि, ईएमयू कृषि, बकरीपालन, खाद्य प्रसंस्करण एकक, कस्टम हाइरिंग केंद्र, अंगूर के पौधों की नर्सरी, ऊतक संवर्धन, आदि।

क्रेडिट लिंकेजों में तेज़ी लाने के लिए बैंकरों की बैठक: केवीएएएफ़

अध्ययन से पता चला है कि एसी एवं एबीसी योजना की सफलता और ऐग्री-वेंचरों की स्थापना में मुख्य बाधा खराब क्रेडिट लिंकेज है। सभी कोशिशों के बावजूद, कृषि उद्यमियों तक उनके परियोजना की स्थापना के लिए ऋण की पहुँच सराहनीय सुधार नहीं ला पाई है। इसका कारण वाणिज्यिक बैंकों के संचार और संवेदनशीलता तथा कृषि उद्यमियों और उनकी आवश्यकतों के बीच महत्वपूर्ण दूरी है। कृष्णा वैलि एडवांस एग्रिकल्चरल फ़ाउंडेशन (केवीएएएफ़)-सांगली, एक नोडल प्रशिक्षण संस्थान जो महाराष्ट्र राज्य में अपने 8 केन्द्रों द्वारा एसी एवं एबीसी योजना का कार्यान्वयन कर रहा है, ने इस मुद्दे का समाधान ढूँढने की पहल की है। क्रेडिट लिंकेज में सुधार लाने के लिए संस्थान में नियमित रूप से बैंकरों की बैठकों के आयोजन ने अनुकूल परिणाम दिये हैं।

कृषि उद्यमियों की बैंकरों बैठक के दौरान बातचीत

बैंकरों की बैठक के मुख्य उद्देश्य है:

- कृषि उद्यमियों के ऋण की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनुपूरक क्रेडिट रणनीति तैयार करना।
- बैंकरों और कृषि उद्यमियों के बीच पारस्परिक विश्वास और भरोसा कायम करना।
- दोनों लाभ और ऋण की ओर बैंकिंग गतिविधि को बढ़ावा देना।

विचारधीनता को कम करने के लिए योजना के अंतर्गत विचारधीन आवेदनों को शीघ्र पूर्ण करना। केवीएएएफ़, उत्तूर ने हाल ही में सभी वरिष्ठ बैंकरों और राज्य कृषि विभाग के अधिकारियों को आमंत्रित कर बैंकरों की बैठक आयोजित की। प्रशिक्षण समन्वयक ने एसी एवं एबीसी योजना के संशोधित दिशानिर्देशों को विस्तार से समझाया। सफल कृषिउद्यमियों ने अपनी सफलता की कहानी सुनाई और ऋण की मंजूरी लेने के लिए उनके द्वारा सामना की गई चुनौतियों की जानकारी दी। तत पश्चात, बैंक-वार लंबित परियोजना की सूची तैयार की गयी और संबंधी बैंकरों को लेनदारों से विचार-विमर्श करने के लिए आमंत्रित किया गया और क्रेडिट लिंकेज में तेज़ी लाने पर निर्णय लिया गया। यह बैठक काफी सफल रही और 45 परियोजनाओं को बैठक में ही स्वीकृति प्राप्त हो गयी।

कृषि महिलायों के लिए अनुकूल कृषि यंत्रे और उपकरण

महिलाओं को कृषि में कम परिश्रम से कार्य सम्पन्न करने के लिए सक्षम बनाने हेतु आईसीएआर के अंतर्गत विभिन्न कृषि संस्थानों जैसे केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान(सीआईएई), भोपाल, मध्यप्रदेश, गृह विज्ञान हेतु अखिल भारतीय समन्वित परियोजना (एआईआरसीपी) केंद्र, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में गृह विज्ञान महाविद्यालय, ने विभिन्न सामाग्री एवं हस्त उपकरण निर्मित किए हैं। हालांकि, इन संस्थानों की कृषकों तक सीमित पहुँच के कारण, महिलाएं अधिकतर इन विकासों से अनभिज्ञ रह जाती हैं। कृषि में राष्ट्रीय लिंग संसाधन केंद्र(एनजीआरसीए), कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय कृषि में महिलाओं के लिए निर्मित 69 पर्यावरण-अनुकूल उपकरण एवं सामाग्री को लोकप्रिय बनाने के लिए सार-संग्रह निकालने हेतु अभिज्ञ प्रयास किया गया है। कृषि उद्यमी जो कस्टमर हाइरिंग और कृषि मशीनीकरण से जुड़े हुये है उनसे अनुरोध है कि वे उल्लिखित वेब-लिंक देखे और जानकारी उपलब्ध कराए। वेबलिंक: // http://agricoop.nic.in

साइकल होए

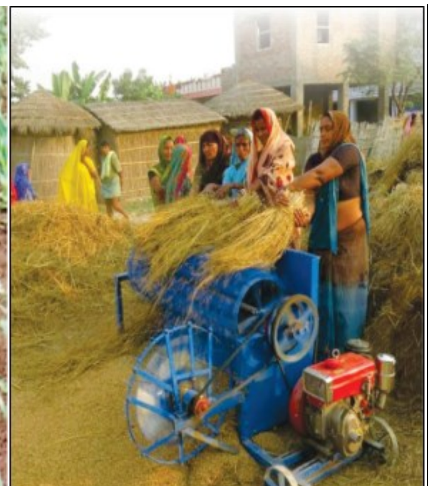

मूँगफली डेकोर्टिकेटर

मक्का डे-हसकर-शेल्लर

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों, के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

"कृषि उद्यमी" श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
कृषि-उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंधन संस्थान (मैनेज),
राजेंद्रनगर, हैदराबाद -500 030, भारत
ई-मेल: agripreneur@manage.gov.in

मुख्य संपादक : श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, संपादक : डॉ.पी. चन्द्रशेखर ,सहायक संपादक: डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमति ज्योति सहारे,
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली